क्रमाय ये जुइति श्रद्धानाः सत्यवता इतिषष्टाशिनय। गवां लोकं प्राप्यते पृष्यगन्धं प्रायन्ति देवं परमञ्चापि सत्य। ॥ तार्च्य उवाच ॥ चेवज्ञभ्रतां परलोकभावे कर्मीद्ये बुद्धिमितप्रविष्टा। प्रज्ञाञ्च देवीं सुभगे विम्टर्य प्रच्छामि लां का ह्यसि चारुक्षे।

॥ सरखत्यवाच ॥ श्रमिहोत्रादहमभ्यागताऽस्मि विप्रषेभाणां समयक्देदनाय । लत्संयागादहमेतमत्रवं भावे स्थिता तथ्यमधं ययावत्। • 

॥ तार्च्य उवाच ॥ निह लया सहभी काचिद्स्ति विभाजमेऽ त्यतिमात्रं यथा श्री:। रूपञ्च ते दिव्यमनन्तकान्ति प्रज्ञाञ्चदेवीं ग्रुभगे विभर्षि। 等性。12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15年,12.15

॥ सरस्तत्यवाच ॥ श्रेष्ठानि यानि दिपदां वरिष्ठ यज्ञेषु विद्वनुपपादयन्ति। तैरेव चाहं सम्प्रद्वद्वा भवामि चाषायिता रूपवती च विप्र।

यचापि द्रव्यमुपयुज्यते ह वानस्पत्यमायमं पार्थिवं वा। दिव्येन रूपेण च प्रज्ञया च तवैव सिद्धिरिति विद्धि विद्वन्। ॥ तार्च्छ उवाच ॥ ददं श्रेयः परमं मन्यमाना व्यायक्केन मुनयः सम्प्रतीताः । श्राचल मे तं परमं विशेषं मीत्तं परं धं प्रविश्वानि धीराः। A STATE OF THE PROPERTY OF THE

माह्या योगाः परमं यं विद्नित परं पुराणं तमहं न वेद्मि ॥ सरखत्युवाच ॥ तं वै परं वेदविदः प्रपन्नाः परं परेभ्यः प्रियतं प्राणं। A SOUTH THE THE PERSON WHEN THE WAS TO SELECT THE

खाध्यायवन्ता त्रतपुष्ययागैसपोधना वीतशाका विस्ताः। तस्याय मध्य वेतमः पुष्यगन्धः सहस्रमाखेः विप्तो विभाति। तस्य मूलात् मरितः प्रस्वन्ति मधूदकप्रस्वणाः सुपुष्याः।

शाखा शाखां महानद्यः संयान्ति सिकताश्रयाः। धानापूपा मासशाकाः सदा पायसकर्द्भाः। यसिन्निमिखा देवा: सेन्द्राः सहमहद्रणाः । ईजिरे ऋतुभिः अष्ठैसात्पदं परमं मम ।

द्वित श्रीमहाभारते त्रार्ष्यपर्वणि मार्कण्डेयममास्यापर्वणि सवस्वतीता द्यमंवादे षडशोत्यधिकशतोऽध्यायः॥ १८६॥ ॥ वैश्रम्पायन उवाच ॥ ततः स पाण्डवा विप्रं मार्कण्डेयमुवाच ह। कथयखेति चरितं मनार्वेवखतस्य च। ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ विवस्ततः सुता राजन् महर्षिः सुप्रतापवान् । बस्रव नर्गार्टू स प्रजापितसमग्रतिः । त्राजमा तेजमा सद्या तपमा च विशेषतः। त्रितचक्राम पितरं मनुः खञ्च पितामहं। ऊर्द्धबाङ्घर्विशालायां बद्यां म नराधिपः। एकपादि खितलीत्रं चचार सुमहत्तपः। अवाक्शिरास्त्या चापि नेचैरनि मिषेईढं। साउतप्यत तपो घारं वर्षाणामयुतं तदा। तं कदाचित्तपखन्तमाईचीरं जटाधरं। चीरिणीतीरमागम्य मन्या वचनमत्रवीत्। भगवन् चुद्रमत्योऽसि बलवङ्गी भयं मम। मत्येभ्ये। हि तती मा लं चातुमईसि सुत्रत। दुर्व्वं बनवन्ता हि मत्या मत्यं विशेषतः। श्राखदन्ति सदा वृत्तिविहिता नः सनातनी। तसाद्भयाचानाहतो मञ्चनं मा विभेवतः। वातुमहिस कर्ताऽसि कते प्रतिकतं तव। म मत्यवचनं श्रुता रूपयाऽभिपरिष्ठतः। मनुर्वेवखता उग्रहात्तं मत्यं पाणिना खयं। उदकान्तमुपानीय मत्यं दैवखता मनुः। ऋ विचिरे प्राचिपत्तं चन्द्रा ग्रुसदृशप्रमे।